भारत सरकार
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय

लोक सभा
अतारांकित प्रश्न संख्या : 1987
दिनांक 30 जुलाई, 2026

ई 10-संगत वाहनों पर ई 20 पेट्रोल का प्रभाव

†1987. **श्री चव्हाण रविन्द्र वसंतरावः**
श्री टी. एम. सेल्वागणपतिः

क्या ***पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस*** मंत्री यह बताने की कृपा करेंगे किः

(क) क्या सरकार को ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एआरएआई) के निष्कर्षों सहित उन रिपोर्टों की जानकारी है जिनमें यह दर्शाया गया है कि ई-20 पेट्रोल के उपयोग से ई-10 ईंधन के लिए बनाए गए अथवा उसके अनुरूप ढाले गए वाहनों के इंजनों, ईंधन प्रणालियों, रबड़ के पुर्जों और गास्केट सहित कतिपय प्लास्टिक के पुर्जों पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है;

(ख) यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है और सरकार ने प्रभावित होने वाले वाहनों की संख्या और श्रेणियों के बारे में क्या आकलन किया है;

(ग) क्या यह भी सच है कि ई-20 पेट्रोल के उपयोग से ई-10 के अनुरूप ढाले गए वाहनों में ईंधन प्रणाली के कतिपय पुर्जों में तेजी से गिरावट आ सकती है; और

(घ) क्या सरकार ने मुआवजे की वारंटी, बीमा कवरेज आदि से संबंधित मामलों पर ई-20 पेट्रोल की शुरुआत के निहितार्थों की जांच की है और यदि हां, तो तत्संबंधी ब्यौरा क्या है?

उत्तर
पेट्रोलियम और प्राकृतिक गैस मंत्रालय में राज्य मंत्री
(श्री सुरेश गोपी)

(क) से (घ): इथेनॉल मिश्रित पेट्रोल (ईबीपी) कार्यक्रम को एक चरणबद्ध, वैज्ञानिक रूप से प्रमाणित और विचार-विमर्श प्रक्रिया के माध्यम से कार्यान्वित किया गया है जिसमे नीति आयोग, ऑटोमोबाइल निर्माता कंपनियाँ, तेल मार्केटिंग कंपनियाँ (ओएमसी), ऑटोमोटिव रिसर्च एसोसिएशन ऑफ इंडिया (एआरएआई), सोसायटी ऑफ इंडियन ऑटोमोबाइल मैन्युफैक्चरर्स (एसआईएएम), भारतीय पेट्रोलियम संस्थान (आईआईपी) और दूसरे तकनीकी संस्थान शामिल हैं।

ऑटोमोबाइल विनिर्माता, एसआईएएम, एआरएआई, घटक विनिर्माता, परीक्षण एजेंसियां और तेल विपणन कंपनियां (ओएमसी) के साथ पूर्ण विचार-विमर्श के बाद ही उच्चतर इथेनॉल मिश्रण को रोलआउट किया गया।

एआरएआई, एसआईएएम, आईओसीएल, आईआईपी और वाहन निर्माताओं द्वारा किए गए व्यापक प्रयोगशाला अध्ययनों और क्षेत्र परीक्षणों से यह पुष्टि हुई है कि ई20 निर्धारित मानकों के तहत उपयोग के लिए सुरक्षित है जिसमें इंजन के टिकाऊपन, चलाने में आसानी, स्टार्ट होने की क्षमता, जंग-रोधी क्षमता, सामग्री की अनुकूलता, उत्सर्जन और ईंधन की दक्षता जैसे पहलुओं की जाँच की गई।

इन अध्ययनों से यह भी प्रमाणित हुआ है कि पुराने वाहनों के कार्य-निष्पादन में कोई विशिष्ट बदलाव नहीं आया और न ही ई20 के कारण उनमें कोई असामान्य टूट-फूट हुई। इन व्यापक प्रयोगशाला

अध्ययनों, क्षेत्र सत्यापनों और वास्तविक दुनिया में उपयोग के अनुभव से यह प्रमाणित नहीं हुआ है कि ई20 ईंधन के कारण वाहनों के कार्य-निष्पादन पर कोई व्यापक बुरा प्रभाव पड़ा है।

सरकार का आकलन न केवल प्रयोगशाला में हुए अनुसंधान पर बल्कि संपूर्ण देश में इसे लागू करने के पश्चात वृहद अनुभव पर भी आधारित है। भारत में प्रतिदिन लगभग 8 करोड़ वाहन (इनमें से लगभग 80% पेट्रोल वाहन होते हैं) खुदरा बिक्री केंद्र पर आते हैं ।

इस तथ्य से यह स्पष्ट है कि ई15+ मिश्रित पेट्रोल का उपयोग साढ़े तीन वर्षों से अधिक से और ई19-ई20 इंधन का उपयोग ढाई वर्षों से अधिक से हो रहा है। 20 करोड़ से अधिक दुपहिया और 3 करोड़ से अधिक पेट्रोल कारें इन मिश्रणों के साथ चल रही हैं जिनमे इथेनॉल मिश्रण के कारण से इंजन खराब होने या गाड़ी के खराब होने का कोई भी सत्यापित प्रमाण नहीं मिला है। विनिर्माता के सर्विस संबंधी आँकड़े से पुष्टि होती है कि ई20 इंधन के कारण गाड़ियों में कोई असामान्य जंग, घिसाव या गाड़ी की उम्र कम होने जैसी समस्या नहीं होती है। विनिर्माता ई20 इंधन का उपयोग करने वाली गाड़ियों के लिए गारंटी की शर्तें पूरी करते रहते हैं, जिससे इसकी सुरक्षित और भरोसेमंद होने पर और भरोसा बढ़ता है।

एक अग्रणी ओईएम ने वित्त वर्ष 2025-26 के दौरान 2.84 करोड़ वाहनों की सर्विसिंग की, जिसमें लगभग 1.5 करोड़ वाहन शामिल हैं जो मूल रूप से ई20-संगत के रूप में प्रमाणित नहीं थे, और कोई भी ई20-लिंक्ड संक्षारण, प्रतिकूल घिसाव या कॉमपोनेन्ट उपयोग काल में कमी की सूचना नहीं प्राप्त हुई थी। एक अग्रणी 2-पहिया कंपनी ने इसी तरह के क्षेत्र अनुभव की सूचना दी है। हाल ही में एक ओईएम ने बताया कि विस्तारित अवधि में भी ट्रैक करने पर 1.4 करोड़ ई20-प्रचालित वाहनों के डेटा ने इथेनॉल-प्रेरित संक्षारण का कोई प्रमाण नहीं प्रस्तुत किया। एआरएआई ने फिर से पुष्टि की कि वाहन उपभोक्ताओं तक पहुंचने से पहले कड़े अंतरराष्ट्रीय-मानक सत्यापन से होकर गुजरते हैं।

ई20 के वैज्ञानिक मूल्यांकन और चरणबद्ध तरीके से कार्यान्वित करने के हर चरण में ऑटोमोबाइल विनिर्माता, अवयव आपूर्तिकर्ता, एसआईएएम, एआरएआई, परीक्षण एजेंसियां और तेल विपणन कंपनियां शामिल थीं। ई20 को तभी लागू किया गया जब ईंधन प्रणाली, इंजन का टिकाऊपन, वाहन चलाने में आसानी, मटीरियल की अनुकूलता और उत्सर्जन कार्य-निष्पादन का सफल सत्यापन हो गया। इन अध्ययनों से निर्धारित प्रचालन स्थितियों में पुराने वाहनों की कार्य-निष्पादन, टिकाऊपन या पदार्थ की अनुकूलता पर कोई बुरा असर नहीं दिखा।अगर ऑटोमोबाइल विनिर्माता परिणामों से पूरी तरह संतुष्ट नहीं होते, तो वे न तो पुरानी गाड़ियों के लिए ई20 ईंधन को अनुमोदन देते और न ही वारंटी की शर्तों को मानते।

एसआईएएम और एआरएआई के अनुसार, ई20 कार्बन उत्सर्जन को कम करते हुए त्वरण और सवारी की गुणवत्ता को बेहतर बनाता है। इथेनॉल का उच्चतर ऑक्टेन नंबर आधुनिक हाई-कम्प्रेशन इंजन को सहायता करता है और इसकी उच्चतम वाष्पीकरण की ऊष्मा दहन दक्षता को बेहतर बनाता है।

*****